NEERAJ®

मध्यकालीन हिन्दी कविता

B.H.D.C.-132

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Sanjay Jain,* **M.A. (Hindi), B.Ed.**

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

मध्यकालीन हिन्दी कविता

Question Paper–June-2024 (Solved) 1
Question Paper–December-2023 (Solved) 1
Question Paper–June-2023 (Solved) 1
Question Paper–December-2022 (Solved) 1-2
Question Paper–Exam Held in March-2022 (Solved) 1-2
Question Paper–Exam Held in February-2021 (Solved) 1-2
Sample Question Paper–1 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. भक्तिकाव्य का स्वरूप और विकास 1
2. रीतिकाव्य का स्वरूप और विकास 15
3. कबीर का काव्य 26
4. रविदास का काव्य 42
5. जायसी का काव्य 51
6. मीराबाई का काव्य 66
7. सूरदास का काव्य 79
8. तुलसीदास का काव्य 94

9. रहीम का काव्य 111

10. बिहारी का काव्य 124

11. घनानंद का काव्य 140

12. भूषण का काव्य 156

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

मध्यकालीन हिन्दी कविता

B.H.D.C.-132

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

*नोट : **प्रथम** प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

प्रश्न 1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किसी एक की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए–

(क) काहे मन मारन बन जाई, मन की मार कवन सिधि पाई।
बन जाकरि इहि मनवा न मरहीं, मन को मारि कहहु कस तरहीं।
मन मारन का गुन मन काहीं, मनु मूरख तिस जानत नाहीं।
पंच विकर जौ इहि मन त्यागौं, तौं मन राम चरन महिं लागौ।
रिदै राम सुध करम कमावऊ, तौ 'रविदास' मधु सूदन पावऊ।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-47, व्याख्या-1

(ख) तन की दुति स्याम सरोरुह लोचन कंज की मंजुलताई हरैं।
अति सुंदर सोहत धूरि भरे, छबि भूरि अनंग की दूरि करैं।
दमकैं दतियाँ दुति-दामिनि ज्यों, किलकैं कल बाल-विनोद करैं।
अवधेस के बालक चारि सदा, तुलसी मन मंदिर में बिहरैं।।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-109, व्याख्या-3

(ग) रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरे, मोती मानस चून।।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-120, व्याख्या-2

प्रश्न 2. भक्तिकाव्य के विकास का परिचय दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-1, 'भक्ति काव्य की पूर्व परंपरा', 'भक्तिकाव्य की पृष्ठभूमि', पृष्ठ-6, 'भक्तिकाव्य का विकास'

प्रश्न 3. रीतिकालीन परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-15, 'रीतिकाल की परिस्थितियाँ'

प्रश्न 4. मीराबाई की भक्ति की विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-67, 'भक्ति भावना'

प्रश्न 5. सूरदास की काव्य-भाषा का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-88, प्रश्न 10

प्रश्न 6. तुलसी-पूर्व रामकाव्य परंपरा का परिचय दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-94, 'तुलसी पूर्व रामकाव्य परंपरा'

प्रश्न 7. जायसी के काव्य में निहित प्रेमतत्व का विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-52, 'जायसी के काव्य में प्रेमतत्व'

प्रश्न 8. बिहारी की कविता में शृंगार और प्रेम चित्रण पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-125, 'बिहारी की कविता में शृंगार', 'सौंदर्य और प्रेम'

प्रश्न 9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) मीराबाई की रचनाएँ

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-66, 'मीरा की रचनाएं'

(ख) रामभक्ति शाखा

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-6, 'रामभक्ति शाखा', पृष्ठ-11, 'रामभक्ति काव्य और विशिष्टाद्वैत'

(ग) रीतिकालीन वीर काव्य और भूषण

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-159, प्रश्न 4

(घ) घनानंद का जीवन परिचय

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-11, पृष्ठ-140, 'युगीन परिवेश, जीवन परिचय और रचनाएं'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

मध्यकालीन हिन्दी कविता

B.H.D.C.-132

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

*नोट : **प्रथम** प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

प्रश्न 1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

(क) जब ते बिछुरै मितवा, कहू कस चैन।
रहत भर्‌यौ हिय साँसन, आँसुन नैन॥

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-121, व्याख्या-6

(ख) अधर चरत हरि कैं, परत ओठ-डीठि पर जोति।
हरित बांस की बांसुरी, इंद्रधनुष रंग होति॥

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-137, व्याख्या-4

(ग) पिय सौं कहेहु सँदेसरा, ऐ भँवरा ऐ काग।
से धनि बिरहैं जरि गई, तहिक धुआँ हम लाग॥

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-64, व्याख्या-5

प्रश्न 2. भक्तिकाव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-3, 'भक्ति काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियां'

प्रश्न 3. 'रीतिकाव्य' का तात्पर्य स्पष्ट करते हुए रीतिकाव्य के प्रमुख भेदों का परिचय दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-16, 'रीतिकाव्य से तात्पर्य', रीतिकाव्य के प्रमुख भेद'

प्रश्न 4. रविदास की भक्ति-भावना का उदाहरण सहित विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-43, 'भक्ति भावना'

प्रश्न 5. मीराबाई के काव्य के अभिव्यंजना शिल्प पर विचार कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-68, 'अभिव्यंजना शिल्प'

प्रश्न 6. सूरदास का जीवन परिचय देते हुए उनकी रचनाओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-79, 'सूरदास का जीवनवृत और रचना-संसार', पृष्ठ-80, 'सूरदास की रचनाएं'

प्रश्न 7. रहीम के काव्य की भाषा और शैली की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-113, 'अभिव्यक्ति कौशल'

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) सूर और तुलसी की भक्ति पद्धति

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-97, 'सूर और तुलसी की भक्ति पद्धति की तुलना'

(ख) घनानंद के काव्य में लोकजीवन

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-142, 'घनानंद के काव्य में लोक जीवन और भक्ति भावना'

(ग) बिहारी की कविता में भक्ति और नीति

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-126, 'बिहारी की कविता में भक्ति, नीति और लोक'

(घ) जायसी के काव्य में प्रेम-तत्व

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-52, 'जायसी के काव्य में प्रेम-तत्व'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

मध्यकालीन हिन्दी कविता

भक्तिकाव्य का स्वरूप और विकास

1

परिचय

भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक और साहित्यिक इतिहास के मध्यकाल की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता को भक्ति आन्दोलन के रूप में पहचाना जा सकता है। साहित्य के क्षेत्र में यह भक्ति काव्य के विराट रस स्रोत के रूप में प्रकट हुआ।

भक्ति काव्य के प्रधानत: दो भेद हैं–निर्गुण और सगुण भक्ति काव्य। निर्गुण भक्ति काव्य की दो शाखाएं हैं–ज्ञानमार्गी, जिसके प्रतिनिधि कवि कबीर हैं और प्रेममार्गी, जिसके प्रतिनिधि कवि मलिक मुहम्मद जायसी हैं। सगुण भक्ति काव्य की भी दो शाखाएं हैं। कृष्णभक्ति शाखा और राम भक्तिशाखा। इनके प्रतिनिधि कवि क्रमश: सूर और तुलसीदास हैं। इसके अतिरिक्त शैव, शाक्त, सिद्ध, नाथ, जैन आदि कवि भी इस काल में रचना करते थे।

अध्याय का विहंगावलोकन

भक्तिकाव्य की पूर्व परंपरा

इस काल में उत्तर भारत मे भक्ति की लहर चलने से पूर्व दक्षिण भारत में इसके उदय को रेखांकित किया जा सकता है। यहाँ भक्ति का प्रभाव दूसरी-तीसरी ई॰ से ही दिखने लगता है। यहाँ भक्ति की भावना को बढ़ावा देने का श्रेय अडियारों (नयनार) एवं आलवारों को जाता है, इनमें महिला भक्त कवयित्रियाँ भी थीं। ऐसा नहीं है कि यहाँ भक्ति साहित्य की रचना केवल तमिल भाषा तक सीमित रही अपितु मलयालम, तेलुगु के साथ कन्नड़ में भी यह साहित्य रचा गया। तेरहवीं-चौदहवीं ई. तक आते-आते इस दक्षिण भारतीय भक्ति का प्रसार उत्तर भारत में भी हुआ और इसने अखिल भारतीय स्वरूप का प्रणयन किया।

इन बातों से यह अनुमान लगाना गलत होगा कि भक्ति साहित्य के लेखन में शैव एवं वैष्णव मत के अनुयायियों का ही प्रभाव था। इस पर बौद्ध, सिद्ध एवं नाथ साहित्य के साथ-साथ इस्लाम के एकेश्वरवाद का भी प्रभाव था। जहाँ सिद्धों, नाथों एवं बौद्धों के प्रभाव से ब्राह्मणवादी रूढ़ियों का तिरस्कार कर लोकवादी भावनाओं को सुदृढ़ता प्रदान की गई, वहीं इस्लाम के सूफी मत की प्रेम एवं उदारतावादी भावना ने भक्ति आन्दोलन को और भी जनप्रिय बनाने में योग दिया, जिससे हिन्दू एवं मुस्लिम की समन्यवादी भावनाओं को भी बल प्राप्त हुआ।

भक्तिकाव्य की पृष्ठभूमि

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, *"देश में मुसलमानों का राज्य प्रतिष्ठित हो जाने पर हिन्दू जनता के हृदय में गौरव, गर्व और उत्साह के लिए वह अवकाश न रह गया। उसके सामने ही उसके देवमंदिर गिराए जाते थे, देवमूर्तियाँ तोड़ी जाती थीं और पूज्य पुरुषों का अपमान होता था और वे कुछ भी नहीं कर सकते थे। आगे चलकर न तो वीरता के गीत गा सकते थे और न बिना लज्जित हुए सुन ही सकते थे। आगे चलकर जब मुस्लिम साम्राज्य दूर तक स्थापित हो गया, तब परस्पर लड़ने वाले स्वतंत्र राज्य भी नहीं रह गए। इतने भारी राजनीतिक उलटफेर के पीछे हिन्दू जन-समुदाय पर बहुत दिनों तक उदासी छाई रही। अपने पौरुष से हताश जाति के लिए भगवान की शक्ति और करुणा की ओर ध्यान ले जाने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग ही क्या था।"*

शुक्ल जी भक्ति आन्दोलन के पीछे मूलभूत कारण मुस्लिम आक्रान्ताओं को मानते हैं, लेकिन यह उपयुक्त प्रतीत नहीं होता जैसे कि हम पहले विचार कर चुके हैं कि भक्ति के बीज वैदिक काल से ही उपलब्ध होते हैं और दक्षिण में तो 12वीं-13वीं सदी से बहुत पहले ही इसका सूत्रपात हो चुका था। हालाँकि दक्षिण के ही शंकराचार्य (8वीं सदी) ने अद्वैतवाद का मत एवं यह कहकर कि 'ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या' ईश्वर एवं उसकी भक्ति को साधारण जन से कोसो दूर कर उसे दुर्गम बना दिया, जिसके प्रतिपक्ष में रामानुज, निम्बार्क, मध्व, वल्लभ जैसे आचार्यों ने खड़े होकर पुन: सुगम बनाने का सार्थक प्रयास कर भक्ति के महत्त्व को पुन: स्थापित किया। इस दिशा में रामानुजाचार्य का योगदान स्मरणीय है। अतएव जो लोग भक्ति को हताश एवं निराश मन की उपज मानते हैं वे सर्वदा भूल करते हैं। इस दृष्टि से **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी** का मत अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है। उनके अनुसार, *"अगर इस्लाम नहीं आया होता तो भी साहित्य का बारह आना वैसा ही होता, जैसा आज है।*

वस्तुत: भक्ति आन्दोलन संपूर्ण भारत का आन्दोलन था। दक्षिण में जहाँ रामानुज, निम्बार्क आदि आचार्यों ने अपनी भूमिका निभाई, वहीं उत्तर भारत में रामानन्द, कबीर, नानक, जायसी,

www.neerajbooks.com

रैदास, सूरदास आदि जैसे संत हुए और पश्चिम में नामदेव, नरसी, मीरा व बंगाल में चैतन्य महाप्रभु एवं चण्डीदास जैसे भक्तों ने भक्ति साहित्य को अपने योग से समृद्ध बनाया। यहाँ एक अन्य बात भी उल्लेखनीय है कि यह आन्दोलन किसी वर्ग विशेष की बपौती नहीं था, इसमें अमीर, गरीब, ऊँची एवं निम्नजाति के हिन्दू एवं मुस्लिम सभी सम्मिलित थे। अतएव यह अखिल भारतीय आन्दोलन के रूप में उभरकर सामने आया। इसी से इस आन्दोलन को बाहरी आक्रान्ताओं द्वारा उत्पन्न हताशा का परिणाम कतई नहीं माना जाना चाहिए।

भक्ति का स्वरूप

यह अर्थ कतई नहीं लगाया जाना चाहिए कि इन भक्त कवियों द्वारा भक्ति साहित्य की रचना सायास की गई, अपितु ये भक्त कवि मूल रूप में भक्त और कवि रूप स्वयमेव मुखरित हुआ है। इन्होंने तो अपनी ईश्वर के प्रति सच्ची निष्ठा एवं अनुरक्ति को स्वर मात्र देने का प्रयास किया। इसी क्रम में इनका कवि रूप उजागर हो उठा। कबीर, जायसी, सूर, मीरा या तुलसी आदि सभी भक्त कवियों ने अपने-अपने ढंग एवं दृष्टि से भक्ति के अर्थ एवं स्वरूप को समझाने का प्रयास किया, जिससे इनके द्वारा दिए गए अर्थ एवं स्वरूप में कुछ न कुछ भिन्नता अवश्य आ गई है। किसी ने ईश्वर को अपने सखा रूप में लिया, किसी ने स्वामी रूप में तो किसी ने पति रूप में। इन सभी बातों को समझने से पहले सर्वप्रथम यह समझना आवश्यक है कि वस्तुतः भक्ति क्या है? नारद ने भक्ति के अर्थ को व्याख्यायित करते हुए 'भक्ति सूत्र' में कहा है–

'सा त्वस्मिन् परमप्रेमरूपा। अमृतस्वरूपा च।'

अर्थात् भक्ति ईश्वर के प्रति परम प्रेमारूपा एवं अमृतस्वरूपा है। उनके अनुसार जो भक्ति को प्राप्त कर लेता है, वह सारे बंधनों से छूटकर अमर हो जाता है। इसके अतिरिक्त यदि 'भक्ति' के शाब्दिक अर्थ पर विचार करें, तो हम पाते हैं कि भक्ति 'भज्' धातु से बना शब्द है, जिसका अर्थ 'सेवा' करना होता है, लेकिन 'भक्ति' के भाव में केवल 'सेवा' ही नहीं है, अपितु ईश्वर का आराधन, वन्दन, समर्पण, प्रेम सभी कुछ समाहित है।

भक्ति ही ईश्वर तक पहुँचने का सबसे सरल माध्यम या मार्ग है, लेकिन भक्ति की प्राप्ति कैसे हो? इसके लिए 'भागवत पुराण' में 'नौ साधनों', श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चना, वंदना, दास्य, सख्य एवं आत्मनिवेदन का उल्लेख किया गया है। इनके भाव द्वारा मनुष्य भक्ति को प्राप्त कर सकता है। इसके अतिरिक्त 'भागवत पुराण' में भक्ति के 'दो' प्रकारों 'सगुणा (गौणी)' व 'निर्गुणा (अहैतुकी)' की भी चर्चा की गई है। जब भक्त किसी कामना से प्रेरणा ग्रहण कर ईश्वर का आराधन-वन्दन करता है, तब यह भक्ति 'सगुणा' कहलाती है और जब भक्त सभी कामासक्ति से ऊँचा उठ ईश्वर के प्रेम एवं उसकी कृपा को ही अपना ध्येय बना लेता है, तब वह भक्ति 'निर्गुणा' कहलाती है। भक्ति काव्य पर सर्वाधिक प्रभाव निर्गुण भक्ति का ही दृष्टिगत होता है।

भक्ति काव्य को हम अध्ययन की सुविधा हेतु निर्गुण भक्ति काव्य एवं सगुण भक्ति काव्य दो भागों में विभक्त कर सकते हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भी भक्त कवियों को सगुण व निर्गुण भक्त कवियों की श्रेणी में विभक्त किया है। भक्ति काव्य के इन दोनों भागों की विशेषताओं पर पृथक-पृथक विचार करने से पूर्व हम भक्ति काव्य की सामान्य विशेषताओं पर विचार करेंगे जोकि लगभग सभी भक्त कवियों की कृतियों में पाई जाती हैं। **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी** ने भक्ति काव्य की जिन सामान्य विशेषताओं को बताया है, वे इस प्रकार हैं–

(क) प्रेम ही पुरुषार्थ है, मोक्ष नहीं।
(ख) भगवान के प्रति कौलीन्य से बड़ी चीज है।
(ग) भक्त भगवान से भी बड़ा है।
(घ) भक्ति के बिना शास्त्र-ज्ञान और पांडित्य व्यर्थ है।
(ङ) नाम रूप से भी बढ़कर है।

इन सबको आधार बनाकर भक्ति काव्य की जो सामान्य विशेषताएँ सामने आती हैं, उनमें ईश्वर के प्रति उत्कट प्रेम, गुरु का महत्त्व, समभाव, शास्त्र-ज्ञान की निस्सारता, नाम का महत्त्व, अहम का तिरस्कार, जन से जुड़ाव आदि महत्त्वपूर्ण हैं।

भक्ति का अर्थ

'भक्ति' शब्द का अर्थ– 'भजन करना' तथा 'सेवा करना' है, लेकिन इस संसार के स्वामी और जगत के नियंता महाप्रभु के अनंत चरित्रों का बखान करके, हम उसका क्या उपकार करेंगे? जिसकी एक झलक पाने के लिए ऋषि-मुनि भी बेचैन रहते हैं और हम रात-दिन जिससे मांगते हुए नहीं थकते, उस जगत पिता की हम जैसे तुच्छ प्राणी क्या सेवा करेंगे? जिसका अंश इस विश्व के अणु-अणु में व्याप्त है, उस परमेश्वर को दीपक दिखाकर हम कौन-सा महत्वपूर्ण कार्य करते हैं? जिसकी कृपा या व्यवस्था से सभी प्राणियों को आहार मिलता है, उसे भोग लगाना क्या हमारी अल्पज्ञता नहीं है? फिर भक्ति क्या है? अनेक आचार्यों ने भक्ति की अनेक परिभाषाएं की हैं। कबीर श्वास-श्वास में राम रटने को कहते हैं, तो तुलसीदास के हनुमान, प्रतिपल अपने प्रभु के ध्यान में ही खोए रहना चाहते हैं– 'कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई। जब तब सुमिरन भजन न होई।' देवी भागवत के अनुसार 'पूजनीयों' के प्रति अनुराग (प्रेम) का भाव ही भक्ति है। होकर परम पिता विष्णु भगवान में लीन हो जावे। 'स्वामी विवेकानन्द' ने भक्त के लक्षण 'शीर्षक के अन्तर्गत' भक्ति' की अनेक परिभाषाओं का विवेचन करने के पश्चात अपना मत दिया है कि, 'आध्यात्मिक अनुभूति के लिए किए जाने वाले मानसिक प्रयत्नों की परम्परा ही भक्ति है, जिसका प्रारम्भ साधारण पूजा-पाठ से होता है और अंत ईश्वर के प्रति प्रगाढ़ एवं अनन्य प्रेम में। 'भक्ति की अनेक परिभाषाएं दी जा चुकी हैं तथा अभी अगणित परिभाषाएं संभव हैं। पृथक-पृथक होते हुए भी इन सब परिभाषाओं के मूल में केवल एक प्रेम-तत्व ही विविध शब्दावली के माध्यम से झलक रहा है। व्युत्पत्तिपरक अर्थ 'सेवा करना' ग्रहण करने पर भी, इसी प्रेम तत्व की उपलब्धि होती है।

भक्ति का स्वरूप

भक्ति काव्य का स्वरूप अखिल भारतीय था। दक्षिण भारत में दार्शनिक सिद्धांतों के ठोस आधार से समृद्ध होकर भक्ति उत्तर भारत

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

में एक आंदोलन के रूप में फैल गयी। इसका प्रभाव कला, लोक व्यवहार आदि जीवन के समस्त क्षेत्रों पर पड़ा। कबीर, जायसी, मीरा, सूर, तुलसी आदि कवियों के साथ रामानंद, चौतन्य महाप्रभु, वल्लभाचार्य आदि आचार्यों के सिद्धांतों में भक्ति के इसी स्वरूप के दर्शन होते हैं।

भक्ति काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियां

हिंदी साहित्य के भक्तिकालीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं–

1. नाम का महत्व–कीर्तन, भजन आदि के रूप में भगवान का गुण सभी शाखाओं के कवियों में पाया जाता है। सभी कवियों ने अपने अपने इष्टदेव के नाम का स्मरण किया है। गोस्वामी तुलसीदास तो नाम को राम से भी बड़ा मानते हैं।

तुलसीदास जी कहते हैं–

मोर मत बड़ नाम दुहूँ।
जेहि किए जग नित बल बूते।

2. गुरु का महत्व–इस काल में गुरु का महत्व ईश्वर के समान या उससे बढ़कर बताया गया है। कबीर गुरु को ईश्वर से बड़ा बताते हैं–

गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूं पांय।
बलिहारी गुरू अपने गोविन्द दियो बताय।।

3. भक्ति भावना की प्रधानता–इस काल के काव्य में भक्ति के परम रूप के दर्शन होते हैं। इस काल में संपूर्ण वातावरण भक्तिमय हो गया था। इनके अतिरिक्त कवियों ने कुसंगति को त्यागकर सत्संगति को अपनाने पर विशेष बल दिया है ताकि मनुष्य में सद्गुणों का संचार हो सके। इस काल के काव्यों में भक्ति रस की प्रधानता के साथ ही साथ रस, छंद, अलंकार योजना आदि भावों का सुंदर चित्रण देखने को मिलता है।

तुलसीदासकृत 'रामचरितमानस', 'कवितावली', 'विनयपत्रिका' तथा सूरदासकृत 'सूरसागर', 'सूर सारावली', 'साहित्य लहरी' आदि इस काल की प्रमुख रचनाएँ हैं। इसी प्रकार निर्गुण शाखा में कबीरदास की 'साखी', 'सबद' व 'रमैनी' तथा मलिक मुहम्मद जायसी का 'पद्मावत' आदि ग्रंथ प्रसिद्ध हैं।

4. आडम्बर का विरोध–सभी भक्ति कवियों ने बाह्य आडम्बरों का विरोध किया है। कबीर के शब्दों में–जप माला छापा तिलक, सरे एक एको काम।

5. आत्म–चेतना व समाज सुधार–भक्ति युग के समस्त कवियों ने आत्म–चेतना जागृत करने पर विशेष बल दिया तथा धर्म के मार्ग पर चलकर ईश्वर से साक्षात्कार की बात कही। मीराबाई और सूरदास की कृष्णभक्ति की पराकाष्ठा तथा तुलसीदास की अटूट रामभक्ति के कारण तत्कालीन हिंदू समाज की आस्थाओं को बल मिला और समाज एक बार फिर से आस्थावान हो उठा।

कबीरदास ने तो हिंदुओं और मुसलमानों दोनों को चेताया और अपनी–अपनी कुरीतियाँ छोड़कर उनसे मानव धर्म का निर्वाह करने के लिए कहा। इस दृष्टि से कबीर सबसे बड़े समाज–सुधारक कहे जा सकते हैं।

6. समन्वय की भावना–भक्तिकाल के साहित्य में धार्मिक, सामाजिक, दर्शानिक आदि सभी क्षेत्रों में समन्वय की भावना मिलती हैं। तुलसीदास में तो समन्वय की विराट चेष्टा मिलती है। भक्ति ज्ञान दर्शन के साथ भाषा–शैली एवं सगुण और निर्गुण में भी तुलसी ने समन्वय की चेष्टा की है।

7. अलौकिक साहित्य–इस काल में जितने भी काव्य लिखे गए हैं, सभी ईश्वरीय हैं। किसी व्यक्ति पर काव्य लिखने का इसमें कोई प्रयास नहीं किया गया है। इस प्रकार ये सभी रचनाएँ आध्यात्मिक कोटि की हैं।

8. दरबारी साहित्य का त्याग–जायसी के अतिरिक्त अन्य कोई कवि कभी किसी राजाश्रय में नहीं रहा। कवि राजाश्रय से मुक्त रहकर स्वतंत्र रचना करते थे।

9. काव्य रूप–इस काल के कृष्णमार्गी तथा ज्ञानमार्गी कवियों ने मुक्तक काव्य की रचना की है। इस विपरीत प्रेममार्गी तथा राज्मार्गी कवियों ने मुक्तक और प्रबंध दोनों प्रकार के काव्यों में रचना की है। भाषा की विविधता इस काल की विशेष प्रधानता है। इस काल के कवियों ने मुक्तक, गेय, पद, दोहा, चौपाई, सोरठा आदि विविध छंदों का प्रयोग किया है। शांत रस इस काल का प्रधान रस है।

इस प्रकार भक्तिकालीन साहित्य में आदर्शवाद की प्रधानता है। मानव में वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना भरी गयी है। इस प्रकार हम पाते हैं कि उत्तम साहित्य और भक्ति भाव दोनों ही अर्थों में भक्तिकाल हिंदी साहित्य का स्वर्णिम काल था। उस युग के महान कवियों द्वारा उत्तम काव्य साहित्य के साथ ही साथ समाज सुधार व लोगों में आत्म–चेतना व राष्ट्रीय चेतना जागृत करने हेतु अनेक प्रयासों को भुलाया नहीं जा सकता।

भक्ति काव्य की सामान्य विशेषताएं

भक्तिकाल की कुछ सामान्य विशेषताएं इस प्रकार हैं–

1. ईश्वर के प्रति दृढ़ आस्था–इस युग के सभी कवियों की ईश्वर के प्रति अनन्य आस्था थी। निगुर्णमार्गी तथा सगुणमार्गी–सभी कवियों ने ईश्वर को सर्वोपरि माना है। सभी सन्त–भक्त कवि ईश्वर को अनादि, अनंत, अन्तर्यामी और सर्वशक्तिमान् मानते हैं। कबीर, दादू, रैदास आदि ने ईश्वर के निर्गुण रूप की उपासना की है। वे मूर्ति–पूजा आदि में विश्वास नहीं रखते थे, परन्तु ईश्वर के प्रति उनकी अनन्य आस्था थी। तुलसी के राम भी परब्रह्म थे और सूर के कृष्ण भी साक्षात् सच्चिदानन्द थे।

2. नाम की महिमा का वर्णन–इस युग के अधिकांश कवियों ने भगवान के नाम की महिमा का वर्णन किया है। इन कवियों के अनुसार संसार–सागर को पार करने का एकमात्र उपाय प्रभु का नाम–स्मरण है।

3. गुरु की महत्ता का चित्रण–भक्ति–काल के सभी कवियों ने गुरु की महत्ता को स्वीकार किया है। सभी सन्त एवं भक्त कवि यह स्वीकार करते हैं कि भवसागर को पार करने की नौका की पतवार गुरु के सबल हाथों में देकर जीव स्वयं को निश्चिन्त अनुभव कर सकता है। गुरु के बिना साधक ईश्वरीय मार्ग पर अग्रसर नहीं हो सकता। कबीर तो गुरु को भगवान से भी बढ़कर मानते थे।

4. माया की निन्दा–भक्तिकाल के सभी कवियों ने ईश्वर के मिलन में माया को बाधक माना है। ये कवि यह स्वीकार करते हैं कि संसार से वैराग्य होने पर ही ईश्वर के चरणों में अनुराग होता है। कबीर ने 'कामिनी' को माया का रूप माना है।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

5. प्रेम–भावना की प्रधानता–भक्तिकाल के सभी कवि ईश्वर के प्रति अनन्य अनुराग रखते हैं। कबीर, जायसी, सूर, तुलसी, मीरा, रैदास, आदि सभी के काव्य में ईश्वर के प्रति गहरे अनुराग की अभिव्यक्ति मिलती है। कबीर के दोहों में विरह की उत्कट अभिव्यक्ति गहन प्रेम की परिचायक है।

6. अहंकार का त्याग–भक्तिकाल के कवियों ने अपने आराध्य का गुणगान किया है। प्रभु के चरणों में समर्पण की भावना इस युग के साहित्य में स्पष्ट देखने को मिलती है। कबीर ने साधक को उस बूंद के समान माना है, जो परमात्मा रूपी समुद्र में खो जाती है, जिसका पृथक् अस्तित्व नहीं रहता।

निर्गुण भक्ति काव्य की सामान्य विशेषताएं

भक्तिकाल के साहित्य को विद्वानों ने दो प्रमुख वर्गों में विभाजित किया है–*(i)* निर्गुण काव्य तथा *(ii)* सगुण काव्य। निर्गुण काव्य में ज्ञानमार्गी शाखा तथा प्रेममार्गी शाखा तथा सगुण काव्य में कृष्ण–भक्ति शाखा तथा राम–भक्ति शाखा प्रमुख वर्ग कहे जा सकते हैं। ज्ञानमार्गी शाखा अथवा सन्त मत के कवियों में कबीर, रैदास तथा सुन्दरदास अधिक प्रसिद्ध हैं। इन कवियों ने समाज में व्याप्त धार्मिक कर्मकाण्ड, तीर्थ, रोजा, मूर्ति–पूजा आदि का प्रबल विरोध किया। ये कवि ईश्वर के निर्गुण रूप के प्रति आस्था रखते थे। इन कवियों ने तत्कालीन समाज के समक्ष धर्म का आदर्श रूप प्रस्तुत किया। ये कवि आचरण पर बल देते थे तथा धार्मिक अन्धविश्वासों का खण्डन करते थे। ज्ञानमार्गी शाखा अथवा सन्त मत की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं–

1. निर्गुण ब्रह्म में विश्वास–सन्त काव्य का मूल आधार निर्गुण (निराकार) ब्रह्म की उपासना है। सन्त कवियों ने यह स्पष्ट किया कि ईश्वर सर्वत्र विद्यमान है, उसका कोई विशेष रूप नहीं है तथा साधना के द्वारा निर्गुण ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है। ईश्वर व्यक्ति के हृदय में भी विराजमान है, वह अविनाशी तथा सर्वशक्तिमान है। ब्रह्म के विषय में अपना अनुभव बताते हुए **कबीर** कहते हैं–

जाकैं मुँह माथा नहीं, नाहीं रूप कुरूप।
पुहुप बास तैं पातरा ऐसा तत्त अनूप।।

ज्ञानमार्गी कवियों के अनुसार ईश्वर का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। वह केवल अनुभवगम्य है। प्रेम तथा योग साधना से उसकी अनुभूति हो सकती है। वह अलख और निरंजन है। वह अक्षय अर्थात् अविनाशी है।

2. रूढ़िवाद तथा मिथ्या आडम्बरों का विरोध–सन्त कवियों ने तत्कालीन समाज में प्रचलित धार्मिक आडम्बरों का प्रबल विरोध किया। इनसे पूर्व नाथ योगियों ने भी धार्मिक पाखण्डों की आलोचना की थी। ये कवि मूर्ति–पूजा, व्रत, तीर्थ, रोजा आदि में विश्वास नहीं रखते थे। **कबीर** ने मूर्ति–पूजा का विरोध किया।

इन कवियों ने धर्म के नाम पर आडम्बर करने वालों को फटकारा। **कबीर** के एक पद की कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं–

मुखड़ा क्या देखे दरपन में
तेरे दया धरम नहीं मन में
ऐंठी धोती पाग लपेटी तेल चुआ जुलफन में
गली–गली की सखी रिझाई, दाग लगाया तन में।

इन कवियों ने माला जपने के स्थान पर हृदय की शुद्धता पर बल दिया।

3. जाति–पाँति का विरोध–ज्ञानमार्गी कवि जाति–पाँति में विश्वास नहीं करते थे। उनका विश्वास था कि प्रभु सर्वव्यापक है। वह प्रत्येक जीव के हृदय में विराजमान है। ईश्वर की दृष्टि में सभी मनुष्य बराबर हैं तथा जो व्यक्ति प्रभु का स्मरण करता है, वह उसे प्राप्त कर लेता है। **कबीर** ने स्पष्ट शब्दों में कहा है–

जाति–पाँति पूछे नहिं कोई।
हरि को भजे सो हरि का होई।।

4. गुरु का महत्त्व–सन्त–कवियों ने सद्गुरु की महिमा का बहुत अधिक वर्णन किया है। इन सन्त–कवियों के अनुसार सद्गुरु की कृपा साधक के लिए अत्यन्त आवश्यक है। उसके बिना साधक को ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती।

5. हठयोग साधना–इन्द्रिय निग्रह और श्वास क्रिया का उचित संचालन करते हुए मन को एकाग्र कर परमात्मा के दिव्य स्वरूप में लीन होने की क्रिया हठयोग कहलाती है। ऐसा करने से व्यक्ति समाधि में प्रवेश कर जाता है। हठयोग का अर्थ बलपूर्वक ब्रह्म से साक्षात्कार करने की दृढ़ इच्छा और उसके अनुसार क्रिया से है। इसमें प्राणायाम, यम, नियम, कुण्डलिनी, जागरण आदि पर बल दिया जाता है। इस मार्ग पर चलने वालों को अनहद नाद सुनाई देता है। **कबीर** के साहित्य में हठयोग–साधना का सुन्दर चित्रण मिलता है–

उलटे पवन चक्रषट बेधा सुन्नि सुरति लै लागी।
अमर न मरै, मरै नहिं जीवे, तेहि खोजि बैरागी।।

6. नारी के प्रति दृष्टिकोण–सन्त मत में नारी के प्रति उपेक्षा–भाव प्रकट किया गया है। कबीर आदि सन्तों ने नारी के कामिनी रूप की निन्दा की है तथा उसे साधना–मार्ग का सबसे बड़ा विघ्न बताया है। कनक और कामिनी को इन कवियों ने 'दुर्गम घाटी' बताया है। कामिनी के प्रति आसक्ति रखने वालों की निन्दा करते हुए **कबीर** ने कहा है–

नारी की झांई परत, अन्धा होत भुजंग।
कबिरा तिनकी कौन गति, नित नारी के संग।।

सन्त कवियों ने नारी के कामिनी रूप की तो निन्दा की है, परन्तु नारी के सती रूप की उन्होंने सराहना भी की है–

पतिव्रता मैली भली, काली कुचित कुरूप।
इक प्रतिव्रता के रूप पर, वारौं कोटि सरूप।।

7. रहस्यवाद–दर्शन के क्षेत्र में जो अद्वैतवाद है, साहित्य के क्षेत्र में वही रहस्यवाद है। सन्त काव्य में भारतीय रहस्यवाद के दर्शन होते हैं। कबीरदास ने ब्रह्म को सत्य तथा जगत् को मिथ्या कहा है। उन्होंने आत्मा तथा परमात्मा के मिलन में माया को बाधक माना है। ज्ञानमार्गी कवियों के रहस्यवाद में प्रेम–भाव की प्रधानता है। स्त्री रूपी आत्मा परमात्मा को पति रूप में प्राप्त करना चाहती है। वह उसके विरह में तड़पती है। परमात्मा से मिलन होता है, तो विवाहिता पत्नी की तरह उसका उल्लास देखते ही बनता है। कबीर की कुछ पंक्तियां द्रष्टव्य हैं–

दुलहिनी गावहु मंगलाचार
हम घर आएहु राजा राम भरतार।।

www.neerajbooks.com